

पड़ी हूं द्वार पै आकर ओ कृपा सिंधु रघुराई ।  
 बड़ी भयभीत हूँ भगुवन समय को देख घबराई ॥  
 भावकु श्री भरत जू भैया! लड़ैते लाल लक्ष्मण जू ।  
 शत्रु नाशी शत्रु सूदन! क्यों इतनी देर है लाई ॥  
 सुजस सबसे ऊंचा तेरा ओ करुणा धाम रघुनन्दन ।  
 शबरी ओ गीध गति दायक सलोने श्याम सुखदायी ॥  
 पड़ी मंझ धार में नैया ओ केवट मीत धनुधारी ।  
 लगाओ पार अब जल्दी है भवरों बीचि चकराई ॥  
 कोई शक्ति नहीं मुझ में जो लीला पार मैं पाऊं  
 गई हूं हार हूं निर्बल तूं ही निबलों का बलदाई ॥  
 नहीं मालूम आगे क्या लिखा है भाग्य में मेरे  
 पड़ी प्रतिकूल जो रेखा मिटाओ वेग तुम आई ॥  
 निर्भय निर्वेर कौशलपति भिखारनि की विनय सुन लो  
 मैं किंकर क्षीण करमों का परामर्श दो हर्षाई ॥  
 गरीबि श्री खण्डि का जीना ओ जाना साथ हो जैसे

दोनों कोकिल का तन पाकर आवें प्रमोद बन माहीं ॥